सत्य और अर्थपूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लेमेन्स इवैंजलिकल फैलोशिप इंटरनेशनल, | जनवरी-फरवरी, 2011

असली प्रकाशन

यहोवा यों कहता है–जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता हैं।

"तम्हें अब तक तो शिक्षक हो जाना चाहिए था , फिर भी यह आवश्यक हो गया है कि कोई तुम्हें फिर से परमेश्वर के वचन की प्रारम्भिक शिक्षा दे। तुम्हें तो ठोस भोजन की नहीं पर दूध की आवश्यकता है। " (इब्रानियों 5:12)

उद्धार, दैविक प्रकाशन पर आधारित है। जब आपका निजी स्वभाव , आप पर प्रकट होता है , आप पश्चाताप करने लगते हो। जब आप , अपने स्वभाव की गहराइयों को और खोदते जाते हो , आपको और अधिक आभास होने लगता है कि आप कित ने अविश्वासनीय हो। आप यह जान पाते हो कि आप की जिन्दगी के लिए और आप पर निर्भर लोगों के लिए

"मैं यहोवा , तम्हारा पवित्र , इस्राएल का सृ जनहार, तुम्हारा राजा हूँ।
जो समुद्र में मार्ग और प्रचण्ड धारा में पथ बनाता है – वह यहोवा यों कहता है। " (यशायाह 43:15,16)

प्रभु, अपना वर्णन इस तरह करते हैं। इस्राएल की प्रजा के विमोचक बनने के लि ए, उन्होंने समुद्र में एक सीधा मार्ग बनाया था। उन्होंने यह दिखाया कि फ़िरौन अब इस्राएल का राजा नहीं रहा। जब फ़िरौन उनका राजा था, तब उनको एक भारी बोझ उठाना पड़ता था। कठोर परिश्रम कराने वाले बेगारी उनके ऊपर नियुक्त थे। इस्राएली प्रजा उस से छुटकारा पाना चाहती थी।

शैतान को यह जा नकारी है कि वह हमें कहाँ पर अत्य धिक पीड़ा पहुँचाकर , हमें सता सकता है। साधारतः वह थोड़ी पीड़ा नहीं पहुँचाता, जिसको हम आसानी से सह पाएँ। वह उस जगह कष्ट और दबाव डालता है जहाँ हमें बहुत अधिक पीड़ा होती और इस तरह भारी कष्ट और नुकसान पहुँचाता है।

छुड़ाने वाला मुक्तिदाता कौन है? वह जो, आप जहाँ बन्धें है, उन सारे जगहों से आपको रिहा करने वाला हो । कुछ ऐसे विचार है जो अत्यंत प्रबल है। ओह, आप उनको अप ने मन से निकालते हैं , मगर वे फिर आ जाते है। वे आपका पीछा करते रहते हैं। और आपके पीछे लगने में अड़े रहते है। आप उनसे भाग नहीं पाओगे। आप महासागर भी पार चुकें होंगे मगर वह विचार अब भी आपके पीछे लगे हैं। मन में कई गलत विचार उठाकर इस तरह शैतान कई लोगों को सताता है। वे कमजोर बन जाते है। और अब उनमें शान्ति नहीं रहेगी। यह तो परमेश्वर का कार्य नहीं हो सकता। परमेश्वर के विचार तो , हमे शक्ति देनेवाले , उन्नति देने वाले और छुड़ाने वाले होंगे।

भ्रष्टता की आत्मा के कारण कई दफा हम अपने और परमेश्वर के विचारों में अन्तर नहीं जान पाते। इसलिए बाइबल कहता

आत्मिक उन्नति के लिए देखना न भूलें।

परमेश्वर की चुनौती

ETC TV **चैनल पर**

हर ***शनिवार सुबह 7:00*** *से* ***7:30*** *बजे*

है, "ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक जान पड़ता है। " (नीतिवचन 14:12) आप कहते हो, "मेरी योजना सही है!" "मेरा मार्ग सही है !" नहीं! नहीं! परमेश्वर के पास कैसे जाये , आपको जानना होगा। यह जानने के लिए उनके पास जाना होगा कि कही यह एक भ्रष्ट आत्मा तो नहीं। या फि र क्या यह परमेश्वर का आत्मा है ? आपके हृदय को जाँचने वा ले और आपकी आत्मा को तोल ले वाले परमेश्वर के पास , आपको जाना होगा। यह भ्रष्ट आत्मा एक अत्यंत शक्तिशाली आत्मा भी हो सकती है। वह आपके पूरे परिवार पर बुरा असर डाल सकती है। माता पिता , बेटे-बेटियों पर उसका असर रहेगा। उस कारण, क्या सही है और क्या गलत है – यह देखना भी असंभाव्य बना सकती है। जहाँ कहीं भी मूर्तिपूजा मौजूद है वहाँ यह भ्रष्टता की आत्मा प्रबल ता से रहना हम देख सकते है। अगर मसीही जन भी किसी चीज की मूर्ति बना लें तो वहाँ भी यह भ्रष्टता की आत्मा मौजूद रहेगी। यह आत्मा मुझे बड़ी ज़ल्दी पहचान में आ जाती ही।

परमेश्वर का वचन कहता है, "यहोवा, उन्हें उनकी सारी विपत्तियों से छुड़ाता है। " मगर चालीस साल बाद भी उनमें शिकायत करने का स्वभाव अब भी बना रहा। हर रोज किसी न किसी चमत्कार का अनुभव करते हुए चालीस साल का लम्बा समय बीतने के बाद भी इस्राएलियों में अविश्वास की आत्मा प्रबल थी।

मगर प्रभु उनके लिए एक मार्ग तैयार करने की कोशिश में थे। शुरुआत में ही , उन्होंने जंगल में उनके लिए एक मार्ग बनाया। जब वे मिस्र देश छोड़कर बाहर आये , तो उनके सामने समुद्र था। जब आपके सामने एक जंगल हो तो आप किसी से पूछते सकते हो, "क्या इसे पार करने का कोई रास्ता है ?" मगर जब आप एक महा सागर के सामने खड़े हो, आप ऐसा प्रश्न कभी नही पूछोगे! मगर परमेश्वर कहते है , "मैं परमेश्वर हूँ – जो प्रचण्ड धारा में पथ बनाता हूँ। " जब आपके सामने प्रचण्ड धारा हो , तो आप भयभीत हो जाते हो। मैं नहीं मानता कि ऐसा कोई व्यक्ति होगा, जिसके अपने मसीही जीवन में कभी न कभी इस प्रचण्ड धारा का सामना, ना हुआ हो।

मैं उनकी तरफ देखता हूँ – वह एक मात्र हैं जो उस पथ को बनाने में समर्थ है। आप में से कई लोगों के व्यक्तिगत जीवन में पवित्र बने रहने की इच्छा है। मगर किसी न किसी तरह इस विषय में आप फिसल रहे हो । और आप किसी तरह असफल महसूस कर रहे हो। कुछ बुरे विचार अब भी आपके म न में है। गुस्सा, कड़ुवाहट, दुष्ट और लालची इच्छायें और तनिक-सी वासना अब भी आपके दिल में किसी कोने में मौजूद है। अथाह जल आपके सामने है। मगर परमेश्वर आपसे क्या कह रहें है ? "मैं यहोवा हूँ जो प्रचण्ड धारा में पथ बनाता हूँ। " अपनी स्थिति को लेकर शायद आप चिन्तित हो। नहीं, विजय का एक साफ पथ है,

पृष्ठ 1 से ...असली प्रकाशन

भी यह कित ना खतरनाक विषय है। जब परमेश्वर का प्रकाशन आप तक पहुँचता है , अपनी मन की दुष्टता ही नहीं बल्कि आपको इस दुनिया में लाने में , परमेश्वर के उद्देश्यों का भी आपको ज्ञान होता है। अगर आप सही दिशा में आगे बढ़ते हो , तो आप परमेश्वर को अपना 'पिता' कह कर पुकारोगे। उनका नाम पवित्र मानोगे। आप चाहोगे कि उनका राज्य आये और आपकी जिन्दगी में उनकी इच्छा

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532- 2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
CHENNAI : LEF Head Quarter, 9-B, Nungambakkam High Road, Chennai, 600 034, 044-2827 2393
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

पूरी हो जाये। जैसे स्वर्ग दूत उनकी इच्छा करने में तत्पर हैं वैसे ही आप भी चाहोगे कि उनकी इच्छा इस जगत में पूरी हो। मगर आप में कुछ ऐसा संघर्ष है जो आपको परमेश्वर की इच्छा से उल्टी दिशा में दौडाता है। वह आपके मन की धोखबाजी है। मनुष्य , पाप के पीछे भागने का ही निर्णय करता है और उसका मन ज़्यादा बेईमान हो जाता है। ऐसी दुष्टता हमारे लहू में ही बह र ही है। "पाप मेंअपनी माता के गर्भ में पड़ा।" इसका म तलब है उसका तन पापमय है और उसके सारे भाव भी पाप से भरे है। "हे परमेश्वर, मुझ में शुद्ध हृदय उत्पन्न कर"। एक सच्चे मसीही की यही प्रार्थना है।

जब विश्वास के द्वारा , आप सुसमाचार के मूल नियमों का पालन करोगे, तब उद्धार का आनन्द आप महसूस कर पाओगे। मगर आपका पुराना स्वभाव आपको पाप की जिन्दगी में खीं चने की कोशिश में लगा रहेगा। लोग जिन्होंने परमेश्वर का प्रकाशन कभी नहीं पाया, वे मसीही जीवन का मज़ाक उड़ायेंगे। उद्धार की शुरूआत दिव्य प्रकाशन से हो ती है। मसीहियत का उद्भव किसी मनुष्य से नहीं हुआ है। वह एक दैविक प्रकटीकरण है। मगर बौद्ध धर्म का उद्गम एक मनुष्य से हुआ है। यह धर्म मनुष्य को अपनी सारे मूल प्रवृत्तियों को नष्ट करने का शिक्षण देता है। उससे कोई कुछ हाँसिल नहीं कर पाएगा। जब संत पौलुस के पास प्रकाशन आया, वह जान गया कि उनमें कोई अच्छाई नहीं है। बाद में उनको और प्रकाशन मिला। तब उन्होंने कहा, "मैं कैसा अभाग मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ायेगा ?" तब दिव्य ज्ञान से वह क्रूस की ओर आकर्षित हुआ। अपने पाप के लिए दुख, क्रूस की उस महान शक्ति को पहचानने में मदद करता जो आपको विजय दे सकती है। पहले आप स्वार्थी थे। मगर अब अपने स्वार्थ के बदले, दूसरों का आपको ज़्यादा ध्यान रहेगा। आपने छुटकारा पाया और अब दूसरों के छुटकारे की कोशिश में अप लगोगे। जब आप दूसरों के छुटकारे की कोशिश में लगते हो तो आप यह पाओगे कि आपके अंदर ऐसी कई शक्तियाँ है जो इसका प्रतिरोध करती है। तब आप अपने को और दीन करके परमेश्वर से सहायता की आ स करोगे। आप की नम्रता और विनम्रता बढ़ती जाऐगी। अगर आप दूसरों को बचाने की खोज में नहीं हो, तो आप में कुछ जरूर गड़बड़ है। जिस से आप प्यार करते हो अगर उनकी मदद करने में भी आप असफल हो , तो आपके जीवन का क्या लाभ है ? आप अपने बच्चों से प्रेम करते हो। मगर क्या आप उनको कुछ ऐसा दे रहें हो जो चिरस्थायी है ? अगर नहीं, तो आपका प्रेम सच्चा प्रेम नहीं है। एक दफा एक नन्ही बच्ची, पास पड़ी गोलियों को निगलती गयी। उसकी माँ ने देख कर भी इस बात पर ध्यान नही दिया। बच्ची मौत के मूंह में पहुँचन वाली थी । किसी तरह इलाज करके उसे बचाया गया। मगर उन गोलियों से बच्ची में हमेशा की कमजोरी आगयी। क्या यह असली प्रेम है?

जब मैं विद्यार्थी था , हर रोज परमेश्वर मुझे संदेश दिया करते थे। और जब मुझे प्रेरणा मिलती, मैं वह संदेश दूसरों को सुनाता। एक दिन परमेश्वर ने मुझे एक संदेश दिया। जब मैं प्रार्थना से वापस लौट रहा था, मैंने कुछ बढ़ईयों को देखा। उनके साथ बैठकर उनको मैंने वह संदेश सुनाया। उनमें से एक व्यक्ति ने मन फिराया और आगे चल सुसमाचार का प्रचारक बना। दूसरों को सुनाने के लिए क्या आप ने परमेश्वर से कोई संदेश पाया है ?

"यीशु ने उस से कहा , मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।"(यूहन्ना 14:6)

या फिर क्या आप अब भी दूध ही पी रहे हो? अगर आप में ठोस भोजन खाने की क्षमता है, तो आप में दूसरों को खिलाने की क्षमता होगी। जब आप ठोस भोजन खा रहें हो , तो आप दूसरों को संदेश देने के लिए हमेशा तैयार रहोगे। जब मैं ने अपनी गवाही दी , कई नौजवान जो छात्र थे, बचाये गये थे, क्यों कि, मैंने अपने पूरे मन और शुद्ध हृदय से उन्हें बताया था। पैसों का लालच – क्या हम उस पर विजय नहीं पायेंगे ? स्वार्थ पर विजय पाने में, क्या हम समर्थ नहीं? हम विजय पा

सात भाई

एक विशाल घर में सात अविवाहित भाई रहते थे। उनमें से छः भाई हर रोज काम करने बाहर जाते थे। मगर एक भाई घर पर रहता था। जब तक उसके छः भाई काम से घर लौटते, वह सारे घर में बत्तियाँ जलाता और पूरे घर को गरम रखता। यही नहीं , वह अपने भूखे लौटने वाले भाईयों के लिए स्वादिष्ट और भरपूर भोजन तैयार करके रखता।

एक दिन उन छः भाईओं ने तय किया कि जो भाई घर पर रहता था, वह भी अब काम करने जाये। "यह उचित नही" सबने कहा , "यह घर पर आराम से है जब कि हम सब नौकरी में गुलामी कर रहें है।" इसलिए सब ने मिलकर सातवें भाई को भी काम ढूंढने के लिए मजबूर किया। मगर जब पहली रात वे सातों घर लौटे तो घर में न रोशनी थी और न ही गरमाहट। और सब से बत्तर बात यह थी कि उनके लिए गरमा-गरम खाना भी तैयार न था। अग ली रात भी वही : अंधकार, ठंड और भूख। वे जल्दी ही अप नी पुराने रीति पर लौट आये और सातवाँ भाई घर पर ही रहने लगा।

बाकी छः दिनों को उज्ज्वल, सन्तुष्ट और उत्साही रखने वाला , विश्राम और आराधना का वह दिन है। जब हम प्रभु के दिन को अपवित्र रखेंगे, तो हम सिर्फ अपने आप को ही हानि पहुँचा रहे हैं।

भरपूर अनुग्रह

एक अपराधी, जो अभी अभी कड़ी सजा काट कर बाहर निकला था , अबसे ईमान्दारी का जीवन जीने की आशा करता था। वह एक ऐसे आदमी के पास आता है जो एक जौहरी है। उस की जवाहरात की दुकान के लिए एक रात के पहरेदार की ज़रूरत थी। निशब्द रातों में उस इमारत की चौ कसी करने के काम में वह लग जाता है। अब सब कुछ उसके काबू में था। और अपने मालिक को लूटने का हर एक मौका उसके हाथों में था। पहली शाम, एक पुराने दोस्त से उस की मुलाकात हो जा ती है जो पूछता है, "तुम इधर क्या कर रहे हो?"

"मैं रात का चौकीदार हूँ।"

"इस जवा हरातों की दुकान पर?"

"हाँ।"

"तुम क्या थे – क्या वह जानता है?"

"नहीं, चुप रहो। अगर वह जान जायेंगे तो मुझे नौकरी से निकाल देंगे।"

"अगर मैं उसे बता दूँ कि तुम एक रहा किये हुए अपराधी हो।"

"ओह, कृपया नहीं ; ऐसा करोगे तो यह दिन इस नौकरी में मेरा अखिरी दिन होगा। मैं अब सुधरना चाहता हूँ।"

"तब चुप रहने के लिए तुमको मुझे पैसा देना पड़ेगा।"

"ठीक है। मगर किसी को पता ना चले।"

इस तरह बेचारा वह व्यक्ति हमेशा डरमें रहता कि कही उसके पिछले जीवन के बारे में उसका मा लिक जान न ले और कहीं उसे नौकरी से निकाल दें।

मान लो कि अगर वह मालिक उस व्यक्ति के बारे में जाने बिना नहीं बल्की वह उस कैदी के पास जाता है और कहता है, "मैं तुमको जानता हूँ – तुम

कौन हो, तुम ने क्या किया है ; तुम्हारी हर एक चोरी और तु म्हारे बारे में मैं सब कुछ जानता हूँ। मगर ईमानदार बनकर जीने का एक मौका, मैं तुमको देने जा रहा हूँ। मेरे कीमती जवाहरातों की चौकसी करने की जिम्मेवारी तुमको देने वाला हूँ।" वह व्यक्ति अपने कर्तव्य का अच्छी तरह पालन कर रहा हो। तब उस पुराने सहचर से उस की मुलाकात हो जाए जो उसको घमकाता है कि वह उसके मालिक को उसकी पिछले जिन्दगी के बारे में सब कुछ बता देगा। वह पूछेगा , "मेरे बारे में क्या बताना चाहते हो?"

"यही, कि तुम सारे चारों के सरदार थे।"

"हाँ, मगर मेरे मालिक मेरे बारे में सब कुछ जानते है ; मेरे बारे में , वे मुझ से बेहतर जानते है।"

निश्चित ऐसा सुन कर उसका साथी चुप हो जाएगा। यीशु मसीह एक मात्र स्वामी है जो , "अनुग्रह और सत्य से भरपूर है।" यीशु मसीह, आपके और मेरे प्रति अनुग्रहमय है क्यों कि वह हमारे बारे में सारा सत्य जानते है। यह भी कि हम में नरक जाने के सिवाय और कोई योग्यता नहीं है। मगर उनके अनुग्रह से, अगर हम विश्वास के द्वारा, व्यक्तिगत रूप से उनके अनुग्रह के योग्य बन पाये, तो हम भी स्वर्ग के साझेदार बन सकते है।

एफ.बि.मायर।

बहुतायत से फलदायक रहना

"जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बुहत फल फलता है।" (यूहन्ना 15:5)

उस दाखलता (अंगूर की बेल) में इतनी परिपूर्णता है। उस दिव्य संरक्षक के संरक्षण में सफलता पाना इतना निश्चित है कि बहुतायत फल एक माँग नहीं बल्कि एक प्रतिज्ञा है जो दोहरी तरह से (यानी वह मसीह में और मसीह उसमें) बनी रहने वाली डाली की तरह फलवंत होना निश्चित है। "वह बहुत फल फलता है।" वह निश्चित है।

अपनी मसीही जीवन में, क्या आपने 'काम' और 'फल' इन दोनों में कभी अंतर देखा है? एक यंत्र, काम कर सकता है : जिसमें प्राण है सिर्फ वही फलता है। नियम लगू करके 'काम' करने के लिए विवश किया जा सकता है: मगर सिर्फ प्रेम से ही तुरन्त प्रतिफल उत्पन्न हो सकता है। काम का मतलब परिश्रम और प्रयास है : फल की महत्वपूर्ण परिभाषा – हमारे अंतरंगिक जीवन से सहज, शान्त और सुखदायक उत्पादन है।

एक माली पूरा प्रयास करके एक सेब के पेड़ की ज़रूरत के हिसाब से सिंचाई, पानी, खाद वगैरह सब दे सकता है; मगर सेब का फल पैदा करने में वह कुछ नहीं कर सकता: वह पेड़ स्वयं फल पैदा करता है। मसीही जीवन भी वैसा ही है : पवित्र आत्मा का फल प्रेम , आनन्द, शान्ति है।" जो स्वस्थ है वह अच्छा फल फलता है : कार्य और फल इन दोनों का आपसी सम्बन्ध शायद इस वाक्य से सही समझ आता है, "सब भले कामों से फलवन्त होकर" (कुलुस्सियों 1:10) हमारे अंतरंग में निवासी पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित भले कामों से , उत्पन्न फल ही परमेश्वर को स्वीकार योग्य है।

नियम और विवेक के दबाव से या उनकी प संद तथा उत्साह के प्रभाव से , आदमी भले काम करने में उत्सुक रह सकते है। मगर फिर भी बहुत कम आध्याक्मिक फल पैदा कर पाऐंगे है। इसका कारण और कुछ नही ब ल्कि सिर्फ यही है कि आत्मा का फल (हमारे अंदर पवित्र अत्मा के कार्यों का सहज और शान्ति का फल है) होने के बजाय, उनके सारे कार्य सिर्फ मानवीय प्रयास है।

सारे काम करने वाले मिलकर आये और हमारे पवित्र 'दाखलता' परमेश्वर को सुने , जबकि वे निश्चित और बहुतायत से फल दायक बनने का नियम हम पर प्रकट कर रहे है : "जो

मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बुहत फल फलता है।" माली एक विषय पर खास ध्यान देता है – उस पैड़ की सेहत का, फिर स्वास्थ फल आप ही उगेंगे। अगर आप फल दायक रहना चाहते हो , तो सावधानी रखो कि आपका आतरंगिक जीवन सिद्ध बना रहें। मसीह के साथ आपका संबन्ध साफ और बहुत नज़दीकी रहे।

एक और नये साल का उदय

नये साल का आगमन हमेशा एक चुनौती की तरह होता है , खास कर यह याद कर कि कैसे इस धरती पर हमारे दिन कितनी जल्दी बीत रहे हैं। यह कितना ज़रूरी है कि हम भजन लिखने वाले के साथ एक क्षण ठहरकर यह प्रार्थना करें – हमें समझ का मन दे , जिससे हम इस साल का हर दिन वैसे बिताएँ , जो परमेश्वर की महिमा करे।

जनवरी 1874 में, फ्राँसिस रिडले हैवरगल के दोस्तों ने उनसे यह शुभकामनाओं का एक पत्र पाया , जिसका शीर्षक था – एक खुशहाल नया साल, हमेशा ऐसा ही हो।– इस संदेश के बाद नए साल की प्रार्थनाओं में सबसे बेहतर मा ने जाने वाली , आत्मसमर्पण की प्रार्थना के यह शब्द लिखे थे।

हे पिता इस नये साल की पूर्व संध्या, पर ऐसा हो,
काम में, इंतजार में बीते यह साल
आपके साथ,
उन्नति का एक और साल , स्तुति को एक और साल,
एक ओर साल , सभी दिनों आपकी संगति करे साबित।

दया, वफादारी और कृपा से भरा यह और एक साल,
आपके मुख के तेज से भर दे आन्नद यह और एक साल,
बीते आपकी गोद के सहारे , यह और एक साल,
बीते आप पर करते भरोसा , शांति और खुशी से विश्राम यह साल।

सेवा और आपके प्रेम की गवाही देता यह एक और साल,
तैयार करे स्वर्गीय पवित्र कार्य के लिए यह नया साल,
एक और साल का आगमन , प्यारे पिता, हो ऐसा,
धरती पर या स्वर्ग में बीते आपके लिए यह साल, आमीन।

कोई भी इस बात को ज़रूर मानेगा कि उस साल उन सभी दोस्तों ने, जिन्होने कुं. हैवरगल के शुभकामनाओं के इस पत्र को पाया , तो इसमें में लिखे शब्दों को बड़े ध्यान से पढ़ा होगा। वह उस कवियत्री की लिखी कविता थी , जो उस समय तक पूरे इंग्लैण्ड में – समर्पण कवियत्री- के नाम से मशहूर हो चुकीं थीं। उनके बारे में यह कहा जाता था कि वह लिखने से पहले उन बातों को अपने जीवन में लागू करतीं थीं। उनका जीवन लगातार और पूरी तरह परमेश्वर को समर्पित था। उनके कई हुनर – मशहूर पियानो बजाने वालीं , गीतकार, सात भाषाओं में माहिर, तेज़ याददाश्त (पूरे नये नियम , भजन, यशायाह और कनिष्ठ नबियों की किताबों को कण्डस्थ कर लिया था) – यह सब परमेश्वर की सेवा में समर्पित किया और दूसरों की सेवा में हर नये साल में। ऐसा हो कि हमारे लिए यह चुनौती इस नये साल में बने।

चुनी हुई।

यीशु की तरफ देखते हुए

एक दिन दो लड़के बर्फ में खेल रहें थे। एक लड़के ने दूसरे से कहा, "चलो देखते है हम में से कौन इस बर्फ में एक सीधा रास्ता बना पायेगा।" उसके साथी ने, इस प्रस्ताव को तुरन्त स्वीकार किया और वे निकल पड़े। एक लड़के ने, सामने एक पेड़ पर अपना लक्ष्य साधा। चुने हुए पेड़ पर अपनी नज़र लग्न से लगाए वह आगे बढ़ता गया। दूसरा लड़का भी उसी पेड़ पर अपनी नजर लगाये चल पड़ा। कुछ दूर चलकर, वह रुककर पीछे मुड़कर देखता कि वह सही चल रहा है की नहीं। और थोड़ी दूर चलकर दुबारा अपने पग पर मुडकर देखा। अपने रू कने के स्थान पर पहुँचकर दोनों ने पीछे मुडकर दे खा। एक लड़के का मा र्ग तो तीर की तरह सीधा था। मगर दूसरे का टेढ़ा-मेढ़ा था। "तुम्हारा पथ कैसे इतना सीधा बना ?" टेढ़े-मेढ़े रास्ता बनानेवाले लड़के ने पूछा।" "क्यों", दूसरे लड़के ने कहा , "मैंने अपनी आखे उस पेड़ पर जमाई और अंत तक पहूँचने तक उससे इधर-उधर नही हटाई; तुम तो रु ककर पीछे मुड-मुडकर देखते रहे और अपने रास्ते से हट गये थे।" मसीही जीवन का यह एक सही चित्रण है। अगर हम अपने विश्वास, आस्था और आशा की दृष्टि को प्रभु यीशु पर लगाये, लगातार उन्हीं पर नज़र जमाये आगे बढ़ते रहे, तब अंततः हम अपने लक्ष्य पर पहुँच पायेंगे – विजय के फूलों को हासिल कर पायेंगे।